MS. RADHA BHATT

Ms. Radha Bhatt is a renowned social worker from Uttarakhand.

2. Born on 16th October, 1933 in a remote place of Uttarakhand, Ms. Bhatt had to take more efforts to continue her education because there was no awareness about education especially for girls and there were no facilities of education in the village. In her teenage, she decided to become a social worker especially to help and development of the women and girls to give education and build a confidence into them. With this aim, she left her education in 12th standard and joined Sarla ben's institute/ashram at the age of 16 years. She entered Lakshmi Ashram when she was just 16 years old.

3. Ms. Bhatt has been serving the women and children and the rural areas of Uttarakhand. She carried out an experiment in propagating social service based on Gandhian ideals and techniques in the Bougad village of Pithoragarh district during 1961-1963. She set up small organizations (Mandals) for the teenagers, a 'one hour school' for the girls, and personality development activities for children of all ages. She motivated the women to work for the preservation of their forests, and set up the Berinag Gram Swarajya Mandal for carrying out social and economic programmes of development. The Mandal is active even today and has contributed largely to the growth of Khadi and village industries and to environmental protection.

4. Ms. Bhatt had toured Denmark and other Scandinavian countries for training in advanced methods of school instruction. After her return she was entrusted in 1966 with the main responsibility of conducting the affairs of the Ashram. For the next 3-4 years she organized the women in a movement against the drinking habit in Almora and the surrounding three districts. The movement was highly successful and brought about the closure of the liquor shops in the region. She also visited the United States, Maxico, Nepal, Pakistan, England, Polland, France, China and Canada to lecture on Environment, Gandhian through to participate in Conferences and to deliver lecturers on various issues.

5. Ms. Bhatt had actively participated in Chipko movement in 1975. She extended the Ashram activities to tree planting programme. She launched a campaign against blasting and excavation in soapstone quarries, with a view to protect the environment and saving the common village grazing lands and forests from destruction. The movement made over 300 acres of land available to the villages of *Khirakot.* Many quarries in the Saryu catchment area were closed down and more than 1.60 lakh trees were planted. She had done 79 thousand kilometers *padyatra* with women and girls in the mountain for different *Andolan,* campaigns during her life. She started 'Nadi Bachao Andolan' in 2008 against the hydroelectric power station with the local women and girls in Uttarakhand.

6. Ms. Bhatt has written many articles and a few books, which have also been published in Danish, Swedish and German languages. She has been associated with many Gandhian institutions, being the Chairperson of the Himalaya Sewa Sangh, New Delhi. She is a member of the Gandhi Smarak Nidhi, New Delhi. She became a Secretary of All India Kasturaba Trust, Delhi. She was the first woman chairperson of the Gandhi Peace Foundation in Delhi, 2006 and Chairperson/President of Lakshmi Ashram Kausani till 2024. She is also a member of Central Himalayan Environment Association, Nainital and Center for Science and Environment, New Delhi.

7. Ms. Bhatt has been honoured with many awards such as Jamnalal Bajaj Award in1991, Godavari Award, Indira Priyadarshini Award (Govt. India) (Environment), Muni Santbal Award and Swami Rama Humanitarian Award 2024.

सुश्री राधा भट्ट

सुश्री राधा भट्ट उत्तराखंड की एक प्रसिद्ध समाज सेविका हैं।

2. 16 अक्टूबर, 1933 को उत्तराखंड के एक सुदूर इलाके में जन्मी, सुश्री भट्ट को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए और अधिक प्रयास करने पड़े क्योंकि वहां शिक्षा, विषेश रूप से लड़कियों के लिए शिक्षा के बारे में कोई जागरूकता नहीं थी तथा गांव में शिक्षा की कोई सुविधा नहीं थी। किशोरावस्था में ही उन्होंने खास तौर पर महिलाओं और लड़कियों को शिक्षा देने और उनमें आत्मविश्वास पैदा करके उनकी मदद और विकास हेतु समाज सेविका बनने का निर्णय लिया। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने 12वीं की पढ़ाई छोड़ दी और 16 साल की उम्र में सरला बेन के संस्थान/आश्रम में शामिल हो गईं। जब वह सिर्फ 16 साल की थीं, तब उन्होंने लक्ष्मी आश्रम में प्रवेश लिया।

3. सुश्री भट्ट उत्तराखंड के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं और बच्चों की सेवा करती रही हैं। उन्होंने वर्ष 1961–1963 के दौरान पिथौरागढ़ जिले के बौगाड़ गांव में गांधीवादी आदर्शों और तकनीकों पर आधारित समाज सेवा के प्रचार–प्रसार का एक प्रयोग किया। उन्होंने किशोरों के लिए छोटे–छोटे संगठन (मंडल) स्थापित किए, लड़कियों के लिए 'एक घंटे का स्कूल' और सभी उम्र के बच्चों के लिए व्यक्तित्व विकास संबंधी गतिविधियाँ आयोजित कीं। उन्होंने महिलाओं को अपने जंगलों के संरक्षण हेतु काम करने के लिए प्रेरित किया और विकास के सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रमों को चलाने के लिए बेरीनाग ग्राम स्वराज्य मंडल की स्थापना की। यह मंडल आज भी सक्रिय है और इसने खादी और ग्रामोद्योग के विकास और पर्यावरण संरक्षण में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है।

4. सुश्री भट्ट ने स्कूली शिक्षा के उन्नत तरीकों में प्रशिक्षण के लिए डेनमार्क और अन्य स्कैंडिनेवियाई देशों का दौरा किया। अपनी वापसी के बाद उन्हें वर्ष 1966 में आश्रम के संचालन की मुख्य जिम्मेदारी सौंपी गई। अगले 3–4 वर्षों तक उन्होंने अल्मोड़ा और आसपास के तीन जिलों में शराब की लत के खिलाफ आंदोलन में महिलाओं को संगठित किया। आंदोलन अत्यधिक सफल रहा और परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में शराब की दुकानों को बंद कर दिया गया। उन्होंने कई विषयों पर व्याख्यान देने और सम्मेलनों में भाग लेने के लिएसंयुक्त राज्य अमेरिका, मैक्सिको, नेपाल, पाकिस्तान, इंग्लैंड, पोलैंड, फ्रांस, चीन और कनाडा का दौरा किया।

5. सुश्री भट्ट ने 1975 मेंचिपको आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने आश्रम की गतिविधियों को वृक्षारोपण कार्यक्रम तक बढ़ाया। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा और गांव के साझा चरागाहों और जंगलों को विनाश से बचाने के उद्देश्य से सोपस्टोन खदानों में विस्फोट और खुदाई के खिलाफ अभियान चलाया। आंदोलन ने खीराकोट के गांवों को 300 एकड़ से अधिक भूमि उपलब्ध कराई। सरयू जलग्रहण क्षेत्र में कई खदानें बंद कर दी गईं और 1.60 लाख से अधिक पेड़ लगाए गए। उन्होंने अपने जीवन के दौरान विभिन्न आंदोलनों, अभियानों के लिए पहाड़ में महिलाओं और लड़कियों के साथ 79 हजार किलोमीटर की पदयात्रा की। लक्ष्मी आश्रम ने पेड़ों की कटाई के मुद्दे पर ग्रामीणों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए शिविर और सम्मेलन आयोजित किए। उन्होंने उत्तराखंड में स्थानीय महिलाओं और लड़कियों के साथ पनबिजली स्टेशन के खिलाफ वर्ष 2008 में 'नदी बचाओ आंदोलन' शुरू किया।

6. सुश्री भट्ट ने कई लेख और कुछ किताबें लिखी हैं, जो डेनिश, स्वीडिश और जर्मन भाषाओं में भी प्रकाशित हुई हैं। वह हिमालय सेवा संघ, नई दिल्ली की अध्यक्ष होने के नाते कई गांधीवादी संस्थाओं से जुड़ी रही हैं। वह गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली की सदस्य हैं। वह अखिल भारतीय कस्तूरबा ट्रस्ट, दिल्ली की सचिव बनीं। वह सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। वह वर्ष 2006 में दिल्ली में गांधी शांति प्रतिष्ठान की पहली महिला अध्यक्ष और वर्ष 2024 तक लक्ष्मी आश्रम कौसानी की अध्यक्ष थीं। वह सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट, नई दिल्ली तथा सेंट्रल हिमालयन एनवायरनमेंट एसोसिएशन, नैनीताल और पर्वतीय पर्यावरण संरक्षण समिति, पिथौरागढ़ जिले की सदस्य भी हैं।

7. सुश्री भट्ट को कई पुरस्कारों, जैसे वर्ष 1991 में जमनालाल बजाज पुरस्कार, गोदावरी पुरस्कार, इंदिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार (भारत सरकार) (पर्यावरण), मुनि संतबल पुरस्कार और स्वामी राम मानवतावादी पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया है।